सम्पादकीय
साहित्य मिशन का प्राण है, पूज्य गुरुदेव की आत्मा है 2

मनुष्य को उत्कृष्ट चिन्तन, सद्बुद्धि की आवश्यकता है - **डॉ. चिन्मय जी** 3

संस्कार व संस्कृति से मिलता है युवाओं को नवजीवन -**श्री महेन्द्र शर्मा जी** 6

नारी सशक्तिकरण अभियान में विशिष्ट योगदान देंगी श्रीमती बेबीरानी मौर्य 8

ऋषिहुड विश्वविद्यालय द्वारा गुरुकुल परम्परा पर आधारित ऋषि संस्कृति के पुनर्जीवन के प्रयास प्रशंसनीय है-डॉ.चिन्मय जी 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जनवरी 2022

वर्ष : 34, अंक : 14
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

महाकाल की दिव्य योजना में भागीदारी के लिए

कर्मठता की चुनौती और समर्थता की खोज

विचार क्रान्ति-युगगीता गायन

अर्जुन पूरे मन से महाभारत में प्रवृत्त होने को तत्पर नहीं हो रहा था। कृष्ण जानते थे कि अधूरे मन से बेगार भुगतने की तरह जो भी काम किया जायेगा वह अधूरा या असफल रह जायेगा। भावनात्मक तत्परता के बिना समग्र शरीर-संलग्नता सम्भव नहीं। इसलिये इस महत्त्वपूर्व अवसर पर, जबकि तत्काल बाण-वर्षा की आवश्यकता थी, कुछ विराम लिया और गीता सुनाने लगे।

कृष्ण जानते थे कि सही और पूरा काम कराने के लिये व्यक्ति को उस कार्य की उपयोगिता, आवश्यकता एवं फलितार्थों को बताया जाना आवश्यक है। असन्तुष्ट और अन्यमनस्क अर्जुन उपेक्षा भाव से लड़ने भी लगा तो उसमें समुचित शौर्य एवं मनोयोग का समावेश न होगा और अन्ततः महाभारत का उद्देश्य ही निष्फल हो जायेगा। अस्तु, गीता प्रवचन को प्राथमिक, किंतु अति आवश्यक कर्तव्य समझकर भगवान ने पहले उसे ही हाथ में लिया। इसके बाद ही महाभारत निर्माण का पुण्य प्रयोजन पूरा किया जा सका।

अपने सामने भी दुर्बल, दिग्भ्रान्त, दरिद्र और तमसाच्छन्न, नगण्य, एवं तुच्छ बने हुए भारत को समर्थ, समृद्ध और प्रबुद्ध महाभारत के निर्माण का लक्ष्य था। भारत चिर अतीत से महान रहा, अब फिर उसे महाभारत ही बनना होगा। जनशक्ति का अर्जुन अभी मोह और अवसादग्रस्त हो रहा है। उसका 'कार्पण्य' हटाया जाना शेष है। इसके लिये युगगीता गानी पड़ेगी। युग निर्माण योजना की विचार क्रान्ति गीता गायन एवं पाञ्चजन्य का तुमुलनाद है।

राष्ट्र चेतना का जागरण

नवनिर्माण का विकल्प केवल सर्वनाश है। दोनों में से एक को चुनना होगा। निश्चय ही हम सर्वनाश नहीं चुन सकते। नवनिर्माण की जिम्मेदारी स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। सो इच्छा और अनिच्छा से इसी ओर चलना होगा। नियति हमें- प्रबुद्धता सम्पन्न अन्तःकरण वालों को इसी दिशा में नियोजित करके रहेगी।

हम आवेश और आवेगपूर्वक लोकमानस के जागरण की प्रक्रिया सम्पन्न करेंगे। सोते हुए कुम्भकरण को जगाने के लिए पौराणिक उपाख्यान के अनुसार भैंसों के झुण्ड उसकी छाती पर घुमाने पड़े थे। हम लोग भी सुषुप्ति की स्थिति में पड़ी हुई राष्ट्र चेतना को कुम्भकर्णी निद्रा से जगाने का प्रयास करेंगे। यही हमारा प्रचार अभियान है। विश्वास है कि अगले दिनों राष्ट्र जगेगा और अंगड़ाई लेता हुआ उठ खड़ा होगा। जिस दिन यह महादैत्य जगेगा, उस दिन दशों दिशायें काँप जायेंगी। उसके पास अध्यात्म, तत्त्वज्ञान, शौर्य, साहस, विज्ञान एवं सम्पन्नता की इतनी अधिक परम्परागत पूँजी विद्यमान है, जिसके बल पर यह विश्व की अद्भुत, अनुपम शक्ति बनकर रहेगा। सर्वश्रेष्ठता से परिपूर्ण हमारा प्राचीन इतिहास है। अब भविष्य भी ऐसा ही उज्ज्वल होने जा रहा है, जिसमें कि हम प्रत्येक क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं सहयोग कर सकने में समर्थ हो सके।

जिस महाभारत के निर्माण में युग निर्माण योजना की सतत साधना संलग्न है, उसमें धरती पर स्वर्ग का अवतरण और मनुष्य में देवत्व का दर्शन सन्निहित है। तब सर्वत्र स्नेह और सहयोग की गङ्गा-यमुना बह रही होंगी और व्यक्तियों का परस्पर मिलन तीर्थराज प्रयाग बनकर सर्वतोमुखी सुख-शान्ति का सृजन कर रहा होगा। हम ऐसे ही स्वप्नों को साकार करने की साधना कर रहे हैं। **परिजनों की आत्मीयता और प्रबुद्धता दोनों की ओर देखते हुए आशा यही है कि इसे उपेक्षा के गर्त में फेंक न दिया जायेगा। लोगों की भावनाएँ, अन्तःस्फुरणाएँ नपुंसक, निर्वीर्य होकर न रह जायेंगी, वे अवश्य ही सक्रियता के रूप में परिणत होंगी।**

नवनिर्माण की दिशाधारा

अभी प्रचार तन्त्र को सक्षम बनाकर लोक-मानस की विचार पद्धति एवं भाव शृंखला को मोड़ा जा रहा है। इस दिशा में जितनी सफलता मिलेगी उसी अनुपात से सक्रियता का भी सृजन होगा। **सच्ची भावनाएँ क्रिया रूप में परिणत हुए बिना रह ही नहीं सकती। श्रद्धा के साथ सेवा अविच्छन्न रूप से जुड़ी हुई है। यदि हम उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता के प्रति, धर्म एवं आध्यात्म के प्रति सच्ची आस्था जगा देते हैं तो वह सजग व्यक्ति मानवता की अति आवश्यक सेवाओं की उपेक्षा न कर सकेगा। उसे पेट और प्रजनन, तृष्णा और वासना के जाल-जंजाल में से कुछ तो शक्ति एवं समय निकालने की अन्तःस्फुरणा मिलेगी ही और वह कुछ न करे, निष्क्रिय बैठा रहे तो उसकी अन्तरात्मा उसे नोंच खायेगी और चैन से न बैठने देगी।**

इसलिये प्रथम (प्रचारात्मक) चरण के समाप्त होते-होते नवनिर्माण का द्वितीय (सृजनात्मक) चरण हमारे सामने है, जिसमें प्रवेश करते हुए कोटि-कोटि व्यक्ति सृजन प्रक्रिया में अटूट श्रद्धा और प्रचण्ड कर्मठता के साथ संलग्न दिखाई देंगे। रचनात्मक प्रक्रिया में हमारा सपना है कि-

(परम पूज्य गुरुदेव ने अपने मूल आलेख में तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा, नशा उन्मूलन, गाँव-गाँव व्यायामशालाओं और पुस्तकालयों की स्थापना, खेलकूलद की व्यवस्था, स्वास्थ्य रक्षा, शस्त्र संचालन, तरह-तरह की कुरीतियों के उन्मूलन, जाति-लिंग के भेदभाव की समाप्ति, चुनाव सुधार जैसे सक्रियता के अनेक विषयों की ओर ध्यानाकर्षित किया है। वर्तमान परिस्थितियों में इस कड़ी में पर्यावरण प्रदूषण एवं जनसंख्या पर नियंत्रण जैसे अनेक विषय जुड़ गए हैं, जिनमें श्रद्धा, सद्भावना, संवेदना से उभरी सक्रियता को राष्ट्र निर्माण की दिशा में नियोजित करने की आवश्यकता है।)

कर्मठता की खोज

उपर्युक्त कार्यों के लिये एक ऐसी जनशक्ति का उदय होना चाहिए जो पेट और प्रजनन से कुछ ऊँचा उठकर सोच सके और वासना-तृष्णा के लिये मरते-खपते रहने से आगे बढ़कर देश, धर्म, समाज, संस्कृति के लिये कुछ सेवा-सहयोग की, त्याग-बलिदान की बात सोच सके। कर्मठ लोकसेवियों की जनशक्ति उदय हुए बिना सुधार की सारी विचारणाएँ मनोरंजक कल्पनाएँ मात्र बनकर रह जायेंगी। **प्राण तो कर्मठता में रहता है, निर्माण तो पुरुषार्थ से होता है।** इसलिये अपने चारों ओर बिखरे हुए नर-पशुओं में से हमें मनुष्यता का प्रकाश, गर्व और शौर्य उत्पन्न करना है ताकि वह स्वार्थ-संकीर्णता की परिधि से बाहर निकल कर कुछ ऐसा कर सकें जैसा कि प्रबुद्ध और सजग आत्माएँ अपने स्वरूप, तत्त्व एवं कर्तव्य का स्मरण करके प्रयत्न करती रहती हैं।

योजना के प्रथम चरण में हम घर-घर ऐसी ही प्रेरणा, विचारणा. जागृति एवं चुनौती लेकर फेरी लगाने वाले हैं। विज्ञप्तियों का वितरण उसी प्रयोजन के लिये है। झोला पुस्तकालय इसी उद्देश्य से चलाये जा रहे हैं। वाणी का उपयोग, जिसमें धर्म प्रवचनों से लेकर पर्व संस्कारों की विचार गोष्ठियाँ तक सम्मिलित हों इसी मन्तव्य को लेकर आरम्भ कर रहे हैं कि शायद कहीं से दबी छिपी मानवीय श्रेष्ठता की चिनगारियां उभरें। निर्माण के लिये कर्मठता कहीं से जगे और शायद प्रसुप्त मानवीय गौरव, शौर्य, साहस, विवेक, सौहार्द्र जगता मिल जाए। इसी ढूँढ़-खोज में से बीन-बीनकर महाकाल अगले दिनों युग-निमार्ताओं की एक जनशक्ति खड़ी करेगा और वे विश्व शान्ति के प्रहरी स्वयं कष्ट उठाकर लोकमंगल के महान प्रयोजन को पूरा करेंगे।

अखण्ड ज्योति अगस्त 1969, पृष्ठ 16-20 से संकलित, सम्पादित

गुरुसत्ता की आकांक्षा

हर बाप चाहता है कि उसका बेटा उसकी अपेक्षा अधिक बड़ा आदमी बने। हर माँ चाहती है कि उसकी बेटी उसकी तुलना में अधिक सुखी रहे। हमारी आंतरिक भावना ही नहीं, चेष्टा भी यही है कि प्रज्ञा-परिजनों को वह सुयोग मिले, जिसके आधार पर वे महामानवों में गिने जा सकने की स्थिति तक पहुँचें और इतिहास के पृष्ठों पर अपने अंतिम चिह्न छोड़ जाएँ।

एक चीज हमारे मन में है। उसे लेने वाला कोई हो, ऐसा जी ललचाता है। गाय थनों में दूध भरे फिरती है और उन्हें खाली करने के लिए बच्चे को रंभा-रंभाकर ढूँढ़ती और पुकारती है। हमारे पास कुछ ऐसा भी है, जो उच्चस्तरीय है और हमारे मार्गदर्शक ने समूची अनुकम्पा समेट कर हमें दी है। उसे साथ लेकर नहीं मरना चाहते, वरन् यह चाहते हैं कि उस पारसमणि का प्रियजन भी लाभ उठाएँ, जो हमें सौभाग्यवश मिली है। यह स्वाति बूँद की तरह बरसी और नगण्य सी सीप के पेट से बहुमूल्य मोती उगाने में समर्थ हुई है। ***-अखण्ड ज्योति जनवरी 1986, पृष्ठ-56***

साहित्य मिशन का प्राण है, पूज्य गुरुदेव की आत्मा है

शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष में इसका व्यापक विस्तार हो

साहित्य संजीवनी

समाज में साहित्य और साहित्यकारों की कमी नहीं है, लेकिन ऐसा कालजयी साहित्य, जो युग के प्रवाह को पलट दे, जो युगों-युगों तक अपनी अमिट छाप छोड़े, वह किसी विशिष्ट चेतना के प्रवाह का प्रभाव ही होता है। रामायण जैसे ग्रंथ, कबीर के दोहे, मीरा के भजन, संत ज्ञानेश्वर जी की 'ज्ञानेश्वरी' मात्र कागज-कलम से लिखी गई रचनाएं नहीं हैं। यह अंतःकरण की उत्कृष्ट भावनाओं का प्रतिबिंब हैं। अपने गहन तप और अथाह श्रद्धा-समर्पण के बल पर जब साधक सत्य के, ईश्वर के समीप पहुँचता है, तब इन रचनाओं जैसी दिव्य धाराएं उनके अंतःकरण में प्रवाहित होती हैं। यह रचनाएं पाठक को प्रभावित एवं परिष्कृत न करें, ऐसा हो ही नहीं सकता।

परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित विपुल साहित्य भी दिव्य हिमालय से निकली वह पावन गंगा है, जिसके आचमन-स्नान से श्रद्धालुओं के मन, विचार, अंतःकरण पवित्र एवं प्रखर होते चले जाते हैं। युग परिवर्तन जैसे विराट उद्देश्य को लक्ष्य कर उन्होंने 3200 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं। 'अपने अंग-अवयवों से' नामक पत्रक में स्वयं परम पूज्य गुरुदेव इस साहित्य की विशेषता बताते हुए लिखते हैं-

'इस विशालकाय योजना में प्रेरणा ऊपर वाले ने दी है। कोई दिव्य सत्ता बता या लिखा रही है। मस्तिष्क और हृदय का कण-कण, जर्रा-जर्रा उसे लिख रहा है। लिख ही नहीं रहा, बल्कि उसे पूरा करने का ताना-बाना भी बुन रहा है।'

'हमारी वसीयत और विरासत' शीर्षक से लिखी आत्मकथा में पूज्य गुरुदेव ने बताया है कि प्रतिदिन 2 घंटे (लगभग 80 पृष्ठ) स्वाध्याय का उनका नियमित क्रम रहा। जो पढ़ा, उपयोगी ही पढ़ा, मनोरंजन के लिए कुछ नहीं पढ़ा। इतने विपुल साहित्य का नवनीत है युगऋषि की रचनाएं, जिनमें जीवन की हर समस्या का समाधान और हर पग के लिए आवश्यक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन समाहित है।

हम में से जो भी परम पूज्य गुरुदेव से मिले हैं वे जानते हैं कि पूज्य गुरुदेव का लेखन कार्य ब्रह्म मुहूर्त में उपासना के पश्चात ही आरंभ हो जाता था। लेखन के समय उनकी भाव भंगिमा ऐसी होती थी जैसे कोई दिव्य सत्ता बता या लिखा रही है और वे महर्षि वेदव्यास की तरह दिव्यलोक से उतरी दिव्य ज्ञान की धाराओं को लिपिबद्ध करते जा रहे हैं।

शांतिकुंज को परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी काया कहा है और उस काया का प्राण है उनके 'विचार', जो उनके द्वारा लिखे गए विपुल साहित्य में समाहित हैं। यह वह 'प्राण-संजीवनी' है जो आज की हताश-निराश, तरह-तरह के संकटों से ग्रस्त मानवता में नवजीवन का संचार कर देती है। समय की मांग है कि सृष्टा के युग परिवर्तन के संकल्प को चरितार्थ करने के लिए युग साहित्य संजीवनी को जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचाया जाए।

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती

परम पूज्य गुरुदेव की जीवन यात्रा में तीन मुख्य पड़ाव रहे। जन्मभूमि आंवलखेड़ा में उनका जीवन उपासना-साधना द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार प्रधान रहा, जहाँ उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में राष्ट्र की महती सेवा भी की। मथुरा में तप साधना के साथ साहित्य सृजन एवं उसके प्रचार-प्रसार का कार्य प्रमुखता से जुड़ा। हिमालय वासी दिव्य सत्ताओं के निर्देश पर जून सन 1971 में परम पूज्य गुरुदेव ने हरिद्वार में शांतिकुंज की स्थापना की। इस स्थापना का मुख्य उद्देश्य ही 'धर्मतंत्र से लोकशिक्षण' की परंपरा अपनाते हुए सद्ज्ञान की उन दिव्य धाराओं को जन जीवन में प्रवेश कराना रहा है, जो परम पूज्य गुरुदेव के प्राणवान व्यक्तित्व में विचारों के रूप में अवतरित होती रही हैं। अथाह पीड़ा और पतन की और तेजी से बढ़ रही मानवता को इस प्राण-संजीवनी की इन दिनों नितांत आवश्यकता है। इस युग की सारी की सारी समस्याएं मानवीय दुर्बुद्धि से उपजी हैं और उनका एकमात्र समाधान सद्विचार ही हैं। लेकिन उन भागीरथों की भी तो आवश्यकता है जो अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व में उन्हें उतार कर जन-जन तक पहुँचा सकें। ऐसे श्रवण कुमार भी तो चाहिए जिनमें अपने माता-पिता को काँवड़ में बिठाकर कंधों पर उठाकर तीर्थ यात्रा करने की उमंग और साहस हो।

शांतिकुंज की स्थापना छोटी-छोटी साधना तथा सत्प्रेरणा से लोगों के व्यक्तित्व को निखारने तथा उनके माध्यम से युग संजीवनी को, सत्साहित्य को, सद्विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए की गई। परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माता जी ने सत्पात्रों को तलाशा, विभिन्न साधना सत्रों में अपने तप और प्राण का अंश देकर उनमें उत्साह जगाया, उन्हें समर्थ बनाया। जिन्हें यह अवसर मिला, वे भगवान के साथ साझेदारी का अवसर पाकर धन्य हो गए। ऐसा सौभाग्य अनेक जन्म-जन्मांतरों के बाद विरलों को ही मिलता है। शांतिकुंज द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों और रचनात्मक आंदोलनों का उद्देश्य भी परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को, उनके जीवन-आदर्शों को जनजीवन में प्रविष्ट करना ही है।

शांतिकुंज स्थापना की स्वर्ण जयंती उसी परम सौभाग्य की याद दिलाने आई है। वे लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं जो युग निर्माण योजना से जुड़ गए और अपना जीवन सार्थक कर लिया। लेकिन ऐसी लाखों दिव्य आत्मा हैं, जिनका जन्म ईश्वरीय योजना के अंतर्गत इस पुनीत कार्य के लिए हुआ है, लेकिन वे अभी तक अपने सौभाग्य एवं जीवन लक्ष्य से परिचित नहीं हैं। उन दिव्य आत्माओं को खोजना, तराशना उन प्राणवान पुरोहितों का ही दायित्व है, जो अखिल विश्व गायत्री परिवार से जुड़ चुके हैं।

आगामी कार्य योजना

योजना स्पष्ट है-परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का व्यापक विस्तार। इस वर्ष जो भी कार्यक्रम होंगे अथवा जो भी आंदोलन चलाए जाएंगे, उनमें सत्साहित्य की स्थापना को प्रमुखता दी जानी है। प्रभावशाली कार्यक्रमों से जन-जन का ध्यान युग साहित्य के प्रति आकर्षित हो और युग निर्माण योजना से जुड़े प्राणवान कार्यकर्ता अपने जीवन से युगऋषि के सिद्ध सूत्रों को लोगों तक पहुँचा दें तो शांतिकुंज का स्वर्ण जयंती वर्ष सफल सिद्ध हो जाए। लक्ष्य महान है, वर्ष 2021 में इसके अंतर्गत शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष एवं हरिद्वार कुंभ के शुभ अवसर पर देव स्थापना चित्र एवं गंगाजली स्थापना, जनसंपर्क टोलियों तथा सत्साहित्य स्थापना अभियान के माध्यम से भरपूर कार्य हुआ है। लेकिन लक्ष्य अभी बहुत बड़ा है। इसे देखते हुए इस वर्ष सत्साहित्य स्थापना अभियान को भरपूर गति दी जानी है। क्या किया जा सकता है, इस संदर्भ में यहाँ कुछ ध्यानाकर्षण किया जा रहा है :-

सत्साहित्य स्थापना प्रधान कार्यक्रम :- इस वर्ष के समस्त कार्यक्रम सत्साहित्य स्थापना प्रधान होंगे। अतः शांतिकुंज की टोली द्वारा संचालित कार्यक्रमों के अलावा क्षेत्रीय यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार आदि के कार्यक्रमों में भी सत्साहित्य स्थापना पर विशेष ध्यान दिया जाए। प्रत्येक कार्यक्रम में यथोचित मात्रा में सत्साहित्य उपलब्ध रहे। उद्बोधन में युग साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाए।

योजनाबद्ध प्रयास हो :- कार्यकर्ता गोष्ठियों में अपने क्षेत्र में साहित्य स्थापना का लक्ष्य सुनिश्चित किया जाए और उसे प्राप्त करने के लिए कार्य योजनाएं बनाई जाएँ।

सत पात्रों की खोज :- समाज के हर वर्ग के प्रबुद्ध भावनाशीलों तक गुरुदेव के विचार पहुँचाने के लिए हमें अपना जनसंपर्क अभियान तीव्र करना होगा। इसके लिए 2 से 5 लोगों की टोलियां बनाई जाएं और उन्हें सुनिश्चित क्षेत्र सौंपे जाएं तो योजना प्रभावशाली हो सकती है।

स्वाध्याय का क्रम बने

केवल साहित्य स्थापना ही पर्याप्त नहीं है, अभियान की सफलता इस बात में है कि परम पूज्य गुरुदेव के विचार जनजीवन में समाविष्ट हों। व्यक्तिगत स्तर पर तो स्वाध्याय आवश्यक है ही, लेकिन अधिक से अधिक लोगों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए सामूहिक स्वाध्याय की परंपरा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

- कार्यकर्ता गोष्ठियों में विभिन्न विषयो का अध्ययन कर स्वाध्याय, चिंतन मनन का क्रम अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए।
- शक्तिपीठों में आरती-प्रार्थना के बाद अत्यंत संक्षिप्त ही सही, सुविचार प्रस्तुति एवं स्वाध्याय का क्रम जुड़े। अधिक से अधिक लोगों को विचार अभिव्यक्ति का अवसर मिले। भले ही 2 मिनट बोलना हो, व्यक्ति अपने विषय पर चिंतन-मनन जरूर करता है, जो बहुत ही प्रभावशाली होता है।
- गत वर्ष से शांतिकुंज में 'शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष व्याख्यानमाला' का क्रम चल रहा है। इसमें विशिष्ट जनों, विद्वानों के उद्बोधन होते हैं। ऐसी व्याख्यानमाला हर नगर में चलने लगे तो नगर वासियों का ध्यान युगऋषि के विचारों के प्रति आकर्षित हो सकता है।

सत्साहित्य स्थापना तथा युगऋषि के विचारों के विस्तार के लिए अनेक कार्यक्रम हो सकते हैं। स्थानीय आवश्यकता, उपयोगिता एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित की जा सकती है। ध्यान रहे यह सौभाग्य का शुभ अवसर अत्यंत विशिष्ट है। जो साहसपूर्वक आगे आएंगे, ईश्वरीय दैवी योजना में भागीदारी के लिए कदम बढ़ाएंगे, वे धन्य हो जाएंगे।

देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ

शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष 2021-22 के उपलक्ष में इस वर्ष देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ श्रृंखला आरंभ हो गई है। इनमें अधिकांश 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ होंगे, जिन्हें शांतिकुंज से भेजी गई टोलियाँ संपन्न कराएंगी। 10 टोलियाँ रवाना हो चुकी हैं तथा लगभग 5 टोलियाँ और बनाई जा रही हैं। इस श्रृंखला में पूरे देश में लगभग 500 कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

- इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में सद्ग्रंथ स्थापना का लक्ष्य रखा जाए। जितने कुंडीय यज्ञ हो रहा है, कम से कम उतने नये घरों में सद्ग्रंथ स्थापना हो।
- कलश शोभायात्रा में सद्ग्रंथों की शोभा यात्रा को आकर्षण का मुख्य केंद्र बनाया जाए।
- सद्ग्रंथों के तीन तरह के सेट बनाए जा सकते हैं। यह 100 से लेकर 500 या अधिक रुपए की कीमत के हो सकते हैं, ताकि हर स्तर का व्यक्ति अपने घर साहित्य स्थापना करा सके।
- कार्यक्रम से पूर्व जनसंपर्क कर संभावित स्थापना का लक्ष्य सुनिश्चित कर लिया जाए।
- जितने ग्रंथ स्थापित करने हैं उन्हें पहले से ही मंगा कर सेट बनाकर तैयार रखा जाए।
- विगत वर्ष कुंभ महापर्व के उपलक्ष्य में आपके द्वार पहुंचा हरिद्वार और उसके माध्यम से देव परिवार निर्माण का एक विराट कार्यक्रम संपन्न हुआ है। लगभग 1500000 (पंद्रह लाख) घरों में देव स्थापना और देव परिवार निर्माण के संकल्प कराए गए हैं। इसके उपरांत भी अभी हमारे संस्थानों पर बड़ी संख्या में गंगाजली, देव स्थापना चित्र तथा साहित्य शेष रखा हुआ है, उसे भी शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष के कार्यक्रमों में नए घरों में स्थापित किए जाने का अभियान चलाया जाए, ताकि प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान के कार्य क्षेत्र में आने वाले न्यूनतम 24 गांव में युग निर्माण आंदोलन और युग ऋषि के विचार घर-घर पहुँच सकें।

डॉ.चिन्मय पण्ड्या जी का महाराष्ट्र प्रवास

मनुष्य को उत्कृष्ट चिन्तन, सद्बुद्धि की आवश्यकता

-डॉ.चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति दे.सं.वि.वि.

शांतिकुंज स्वर्ण जयंती कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 23 से 26 दिसम्बर 2021 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज हरिद्वार के प्रतिकुलपति डॉक्टर चिन्मय पंड्या जी अपने विदर्भ महाराष्ट्र प्रवास पर नागपुर एयरपोर्ट पहुंचे जहां पर मुख्य सुरक्षा अधिकारी एवं गायत्री परिजनों ने उनका स्वागत किया। विदर्भ के नौ जिलों में लगभग 1400 किलोमीटर के प्रवास दौरान हर जिले में 3 से 4 कार्यक्रम, एवं देवस्थापनाएँ कराई। 520 कोरोना पीड़ित परिवारीजनों से मुलाकात कर सांत्वना भेंट की एवं 49 घरों मे तथा प्रज्ञा संस्थानों में देवस्थापना संपन्न की। इस प्रवास में डॉ.चिन्मयजी ने 25 मंचीय कार्यक्रम सम्पन्न कर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से 20 से 25 हजार परिजनों को संबोधित किया। प्रस्तुत है डॉ.चिन्मय पण्डयाजी के विदर्भ प्रवास के कुछ अंशः-

आद.डॉ.चिन्मयजी गायत्री शक्तिपीठ अकोला एवं कौलखेड़ा पहुंचे और परिजनों से भेंट की। अकोला के अग्रसेन भवन एवं कारंजा के गायत्री ज्ञान मंदिर में परिजनों को संबोधित करते डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी

एयरपोर्ट में स्वागत

नागपुर आंतर्राष्ट्रीय डॉ.बाबा साहिब आंबेडकर हवाई अड्डे पर डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी का आगमन हुआ। जहाँ पर मुख्य सुरक्षा प्रमुख श्री यशवंत सराटकर जी ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। डॉ.चिन्मयजी का युवा प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र के सभी युवाओं की ओर से स्वागत किया गया। एरपोर्ट पर गायत्री परिवार ट्रस्ट की ओर से श्रीमती पुष्पाताई हजारे, देवेन्द्र व्यास तथा श्री संजय कालेजी, श्रीमती जयश्री काले, डॉ.विनय हजारेजी, रूपचंद गोपालानीजी, श्री विजयसिंह सोलंकीने पुष्पगुच्छ व पुष्पमालाओं से भव्य स्वागत किया।

कार्यक्रम का शुभांरभ

अमरावती-राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज की कर्मभूमि गुरुकुंज मोजरी सेवाश्रम अमरावती में गुरुदेव सेवामंण्डल के पदाधिकारीयों द्वारा डॉ.चिन्मय पण्ड्या जी के स्वागत के पश्चात राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज की समाधिस्थल पर श्रद्धा सुमन अर्पण किया। उसके बाद सभी आश्रमवासीओं एवं पदाधिकारीयों को देवस्थापना चित्र एवं गंगाजली भेट की। आश्रम के स्वयं सेवक एवं पदाधिकारी डॉ.राजाराम बोथेजी ने अक्टूबर में होने वाले वार्षिक सप्ताह कार्यक्रम में डॉ.चिन्मयजी को विशेष रूप से निमंत्रित किया।

गौरखेड़ा-गायत्री शक्तिपीठ गौरखेड़ा, परतवाड़ा जिला अमरावती में सतपुड़ा की वादियों में चिखलदरा पर्यटन स्थल के निकट प्रकृति की गोद एवं हरियाली के मध्य में स्थित जनजागरण केन्द्र श्री गायत्री शक्तिपीठ गौरखेड़ा में सभी ग्रामीण क्षेत्र से आये हुए कर्मठ कार्यकर्ताओं ने डॉ.चिन्मयजी का स्वागत किया गया। डॉ.चिन्मय जी ने शक्तिपीठ में प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा, यज्ञशाला, महाकाल मंदिर, गायत्री माता मदिर एवं मूर्ति स्वरूप 24 गायत्री शक्तियों को नमनवंदन प्रणाम किया। साथ में गौशाला, साधना एवं ध्यान कक्ष के साथ पूरे परिसर का अवलोकन किया। यहाँ मुख्य मंच पर शक्तिपीठ के संस्थापक श्री गोविन्दरावजी ने सभी परिजनों की ओर से शॉल, श्रीफल, पुष्पगुच्छ एवं स्मृतिचिन्ह देकर डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी का स्वागत किया। श्री बण्डू जी ने सभी को यहाँ चल रही गतिविधियों की जानकारी दी गई। यहाँ दैनिक यज्ञ, साधना, उपासना, स्वाध्याय, ध्यान सहित यज्ञोपैथी, जड़ीबूटी कल्प, साहित्य स्टाल, गौसंवर्धन एवं संरक्षण, जैविक कृषि, कार्यकर्ता प्रशिक्षण,5 दिवसीय अंतःऊर्जा जागरण सत्र चलाये जाते हैं। विशेष रूप से श्री चिखलकर जी ने यज्ञोपैथी के माध्यम से एवं जड़ीबूटी कल्प द्वारा इस क्षेत्र के तथा अन्य दूर-दूर के क्षेत्र के लोगों की समस्याओं का समाधान किया। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में नागपुर जोन के द्वारा शांतिकुंज प्रतिनिधियों के माध्यम से 5-5 दिवसीय अंतःऊर्जा जागरण सत्र लगभग 3-4 साल से चलाये जा रहें हैं। आगे परिजनों की इच्छा है की शांतिकुंज इस शक्तिपीठ के माध्यम से योग, यज्ञचिकित्सा ,जड़ीबूटी संवर्धन हेतु प्रशिक्षण टोलियाँ यहाँ भेजने की व्यवस्था बनायें। ऐसा निवेदन किया गया। डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी ने बहुत ही संवेदना के साथ में अपने संबोधन के द्वारा सभी के मनों को सिंचित किया एवं आत्मबल बढ़ाया उत्साह बढ़ाया। उन्होंने कहा आनेवाले दिनों में हम सभी परिजनों की विशेश भूमिका रहेगी इसके लिए हमें तैयार रहना है और मिशन को जन-जन तक पहुँचाकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना है। कोरोना काल में दिवंगत हुए परिजनों के प्रति भावसंवेदना प्रगट की तथा चलते-चलते सभी से भेंट परामर्श कर सांत्वना दी। सभी परिजनों की और से संकल्प के रूप में इस आदिवासी बहुल ग्रामीण क्षेत्र में किसानों के उत्थान के लिए 2023 में एक विषेश कार्यक्रम डॉ.चिन्मय पण्डयाजी के मार्गदर्शन एवं दिव्य उपस्थिति में 51 या 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं किसान जैविक कृषि ऋषि सम्मेलन करने का सभी को संकल्प कराया गया।

शेगांव-संत श्री गजानन महाराज नगरी शेगांव में गजानन मंदिर के प्रमुख ट्रस्टी श्री निलकंठदादा पाटिल ने डॉ.चिन्मय पण्डयाजी का शाल एवं श्रीफल देकर स्वागत किया। डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी ने शांतिकुंज स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्यम में देवस्थापना एवं गंगाजल, मिशन का साहित्य देकर उनका सम्मान किया। पश्चात इस संस्थान के पूर्व मुख्य विश्वस्त स्वर्गीय श्री शंकरदादा पाटिल का इस कोरोना काल में निधन हो गया था, उनको श्रद्धांजलि दी एवं परिवार का सांत्वना दी।

दिनांक 5 से 9 मई 2018 में विराट कन्या कौशल शिविर में स्वर्गीय श्री शंकरदादा पाटिल एवं संस्थान के सभी पदाधिकारीयों एवं सेवाभावीयों अमूल्य योगदान रहा था।

अकोला-शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में देव संस्कृति के प्रति कुलपति डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी का अकोला शहर में आगमन हुआ। यहाँ डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी का रत्नमाला गव्हाले तथा अकोला उपजोन के प्रमुख सुरेश कासट ने पुष्पमाला एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। अग्रवाल समिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कागलीवाल ने शाल व श्रीफल देकर सन्मान किया। डॉ. गिरीश अग्रवाल, बबनराव दाने,तथा देवचन्द्र कावलेने स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया। सतीष पांडे गुरुजी, गजानन धमणकरने त्रिपाठी, सुधीर को पुष्प माला एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। यहाँ अग्रसेन भवन में कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गायत्री परिजनों के जिन परिवारों में कोरोना काल में दुःखद घटना हुई उन्हें सांत्वना दी एवं सभी के उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना की। डॉ.चिन्मय जी ने कहा कि मनुष्य का चिन्तन पतन की और जा रहा है, जिसके कारण समाज में दुष्प्रवृतियाँ पनप रही हैं। मनुष्य को उत्कृष्ट चिन्तन, सद्बुद्धि की आवश्यकता है जो कि गायत्री मंत्र के जप, साधना से ही प्राप्त की जा सकती है। मनुष्य देवता बने, देवता पहाड़ी पर नहीं रहते, वे हर मनुष्य में वास करते हैं उसे समझने की आवश्यकता है। जिनके पास ज्ञान है वे ज्ञान बाँटे, और कुछ नहीं हैं तो सभी को प्रेम बाँटें, दुःख दर्द बँटायें आदि अनेक उदाहरण देकर परिजनों का मार्गदर्शन किया। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने महादेवराव बुंदेले को देवस्थापना का चित्र भेंट किया। मंच संचालन श्री रामावतार पाटीदार ने किया। शांतिकुंज हरिद्वार के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में देवस्थापना की, गुरुदेव माताजी एवं गायत्री माता का चित्र गायत्री परिवार के डॉ.गिरिश एवं डॉ.मधु अग्रवाल के माध्यम से भेंट किया। कमला वर्मा, पुष्पा मानकर ने डॉ.चिन्मयजी को तिलक लगाकर भावभीनी विदाई दी।

शान्ति के लिए अध्यात्म जरूरी है-डॉ.चिन्मय पण्ड्या

चंद्रपुर-शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वर्ष कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 25 दिसंबर 2021 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के प्रतिकुलपति डॉक्टर चिन्मय पंड्या जी अपने विदर्भ प्रवास पर गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर पहुँचे और श्रीराम गौशाला का भूमिपूजन किया। इसके पश्चात उन्होंने विधायक श्री सुधीर भाऊ मुनगंटीवार जी के साथ श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण किया। तत्पश्चात प्रियदर्शनी ऑडिटोरियम में उन्होंने प्रबुद्ध वर्ग को संबोधित किया। दिनांक 26 दिसंबर को गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर में बाल संस्कार शाला के बच्चों से मुलाकात की।

चन्द्रपुर में कार्यकर्ताओ को मार्गदर्शन करते डॉ.चिन्मय पण्डयाजी एवं विधायक श्री सुधीर भाऊ मुनगंटीवार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ.चिन्मय पंडयाजी ने यहाँ कहा कि मानव के जीवन में शांति का अवतरण होने के लिए अध्यात्म प्रभावी माध्यम है। मन पर सम्पूर्ण अधिकार पाना और मन में करूणा एवं संवेदनाओं का जागृत होना ही अध्यात्म का चरमोत्कर्ष बिंदू है। वहीं विधायक सुधीर मुनगंटीवार ने कहा कि साने गुरूजी ने सम्पूर्ण विश्व से प्रेम करने को ही सच्चा धर्म बताया है। प्रेम देना ही अध्यात्म की मूल भावना है. अध्यात्म के आधार पर विश्व को आनंद देनेवाले शांतिकुंज के 50 वर्ष पूर्ण होना उल्लेखनीय है। अंतर्मन के पर्यावरण को शुध्द करनेवाला अध्यात्म ही सर्वश्रेष्ठ है। वे पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्व.अटलबिहारी वाजपेयी जी की जयंती के मौके पर भाजपा आध्यात्मिक समन्वय प्रकोष्ठ और अखिल भारतीय गायत्री परिवार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। सेवा को श्रेष्ठ मानना हमारी संस्कृति है। विधायक मुनगंटीवार ने कहा कि देश में श्री हनुमानजी के मंदिर अधिक और राम के मंदिर कम हैं। स्वामी के बजायें सेवक की सेवा को श्रेष्ठ मानने की हमारी भारतीय संस्कृति है। सेवा को श्रेष्ठ माननेवाली भारतीय संस्कृति का मूल आधार आध्यात्म है। कण-कण में भगवान होने की बात हम पुरातन काल से सुनते आ रहे हैं। साथ ही गॉड पार्टिकल है। इस सत्य को भारतीय संस्कृति ने सदियों पहले ही कह दिया है। क्योंकि इसके मूल में अध्यात्म है। कोरोना ने हमें काफी बातें सिखाई हैं. विशेषकर हम स्वयं को पहचानने लगे हैं.

यह सेमिनार ''अध्यात्म क्या था, आज क्या है और कल क्या रहेगा'' विषय पर हुआ। कार्यक्रम में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ.चिन्मय पंडया, विधायक सुधीर मुनगंटीवार, भागवताचार्य मनीष महाराज, हरिद्वार के विश्वप्रकाश त्रिपाठी, रामअवतार पाटीदार, गोपाल शर्मा, सपना मुनगंटीवार, भाजपा के जिलाध्यक्ष देवराव भोंगले, महानगर जिलाध्यक्ष डा. मंगेश गुलवाडे, भाजपा अध्यात्मिक आघाडी के विदर्भ सहसंयोजक मीना देशकर, जिलाध्यक्ष राजकुमार पाठक, महानगर जिलाध्यक्ष डॉ.शैलेंद्र शुक्ल आदि प्रमुखता से उपस्थित थे। कार्यक्रम की प्रस्तावना डॉ.मंगेश गुलवाडे ने रखी। संचालन डा.शैलेंद्र शुक्ल ने किया। आभार राजकुमार पाठक ने माना।

अन्तर्मन को शुद्ध करनेवाला अध्यात्म सर्वश्रेष्ठ-मुनगंटीवार

सेवा को श्रेष्ठ मानना हमारी संस्कृति

देश में श्री हनुमान के मंदिर अधिक और राम के मंदिर कम हैं। स्वामी के बजाय सेवक की सेवा को श्रेष्ठ मानने की हमारी भारतीय संस्कृति है। सेवा को श्रेष्ठ माननेवाली भारतीय संस्कृति का मूल आधार आध्यात्म है। कण-कण में भगवान होने की बात हम पुरानकाल से सुनते आ रहे हैं। -विधायक श्री सुधीर भाऊ मुनगंटीवार

प्रत्येक व्यक्ति में गॉड पार्टिकल रिसर्च में दावा

हाल ही मे अमेरिकन रिसर्च में कहा गया कि प्रत्येक में अणु है। साथ ही गॉड पार्टिकल है। इस सत्य को भारतीय संस्कृति ने सदियों पहले ही कह दिया है। क्योंकि इसके मूल में अध्यात्म है। कोरोना ने हमें काफी बातें सिखाई हैं। विशेषकर हम स्वयं को पहचानने लगे हैं।

मृत्यु उपरांत शरीर निश्चित रूप से खाली हाथ जाता है, परंतु आत्मा खाली हाथों से नहीं जाती है। संस्कार और कर्म लेकर जाती है।

गायत्री शक्तिपीठ स्थापना का 41 वाँ वार्षिकोत्सव सद्ग्रंथ शोभायात्रा रही मुख्य आकर्षण

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

16 दिसंबर 1981 के दिन छिंदवाड़ा जिला धन्य हो गया था, जब स्वयं परम पूज्य गुरुदेव गायत्री शक्तिपीठ छिंदवाड़ा की प्राण प्रतिष्ठा करने पहुँचे थे। उनकी अहैतुकी अनुकम्पा का स्मरण करते हुए 16 दिसम्बर 2021 को 41वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में निकाली गई युगऋषि के विचार शरीर (सद्ग्रंथ) की शोभायात्रा मुख्य आकर्षण रही। पूरा यात्रा मार्ग 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' जैसे जयघोषों से गूँज उठा।

यह सद्ग्रंथ शोभायात्रा शक्तिपीठ पर पहुँचकर सभा में परिवर्तित हो गई। उपजोन समन्वयक दीपचंद मालवी सहित स्थानीय संगठन से जुड़े कई गणमान्यों परदेशी परते, दिनेश देशमुख, श्री शिवनारायण साहू आदि की उपस्थिति में युग परिवर्तन के वर्तमान क्षणों में श्रद्धालुओं, कार्यकर्त्ताओं के दायित्वों की चर्चा हुई, जिसमें लगभग 200 परिजनों की सहभागिता रही। श्री अरुण पराड़कर द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। दीपयज्ञ में भावी सक्रियता के संकल्प उभरे। समापन अवसर पर शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्रीमती अनिता राउत ने सभी का आभार प्रदर्शन किया गया।

छिन्दवाडाः वार्षिकोत्स के अवसर पर सद्ग्रंथ शोभायात्रा में भाग लेते परिजन एवं सद्ग्रंथ स्थापना कराते अग्रणी परिजन

दिया, छत्तीसगढ़ द्वारा 1551वीं कार्यशाला का आयोजन युवा जागरण अभियान की एक शानदार सफलता

दुर्ग। छत्तीसगढ़

विवेकवान और सृजनशील युवा पीढ़ी के निर्माण के लिए समर्पित 'दिया' छत्तीसगढ़ ने युवाओं और विद्यालयों में कार्यशाला आयोजन की कड़ी में 15 दिसम्बर 2021 को डी.ए.वी. मॉडल कॉलेज, दुर्ग में 1551वीं डिवाइन वर्कशॉप आयोजित की। इसमें बी.एड. के 150 से अधिक विद्यार्थी शामिल थे। दिया, छत्तीसगढ़ के संयोजक डॉ. पी.एल. साव, सह संयोजक डॉ. योगेन्द्र कुमार एवं इंजिनियर युगल किशोर ने उन्हें संबोधित करते हुए युग निर्माण योजना की दिशाधारा के अनुरूप जीवन को विकसित करने की प्रेरणाएँ दीं।

डॉ. साव ने श्रोताओं को एक शिक्षक के रूप में निहित शक्तियों का बोध कराया। डॉ. योगेन्द्र कुमार ने कहा कि शिक्षक तभी तक सही मायनों में शिक्षक होता है जब तक उसके अन्दर की रचनात्मकता बनी रहती है। उन्होंने छात्रों को जीवन में सफलता के सूत्र भी बताये और यह भी बताया कि आत्म-संतुष्टि ही जीवन का सबसे बड़ा आनंद होता है। इं. युगल किशोर ने सनातन गुरुकुल परम्परा का उल्लेख करते हुए शिक्षक और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए आवश्यक त्याग और अनुशासन पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन सीतेन्द्र ने किया। आभार प्रदर्शन बीएड प्रभारी एवं असिस्टेंट प्रोफेसर उषा साहू ने किया। प्रबंधक समिति के सदस्य श्री वीनित बंसल, श्री संतोष शर्मा, श्री विनीत श्रीवास्तव, प्राचार्य डॉ. सरोज बघेल, ज्योति सिंह एवं अन्य शिक्षकगण दामिनी साहू, प्रियंका मिश्रा, शान विजय ने आयोजन में विशेष योगदान दिया।

दुर्ग, युवाओं को मार्गदर्शन देते इंजिनियर श्री युग किशोर एवं युवा जागरण अभियान में भाग लेते युवा-भाई-बहिन

कोरोना शमन के लिए आरम्भ किया था जप-प्रार्थना का क्रम, अब दैनिक दिनचर्या का अंग बन गया

जयपुर। राजस्थान

1 मई 2021 को, जब कोरोना संक्रमण अपने चरम पर था, तब गायत्री चेतना केन्द्र मानसरोवर, जयपुर के माध्यम से सामूहिक गायत्री मंत्र जप साधना का नियमित क्रम आरम्भ किया गया। परिस्थितियाँ बदलती रहीं, लेकिन आठ माह से नियमित रूप से चला आ रहा यह साधना-क्रम नहीं बदला। लोग केन्द्र पर एकत्रित होकर जप करते रहे। प्रतिकूलताएँ आईं तो अपने घर पर ही समय का पालन करते हुए लोग इससे जुड़े रहे। 70 से 80 लोगों ने इस साधना क्रम में भाग लेकर कोरोना से मुक्ति एवं सबके मंगल की, विश्व कल्याण की प्रार्थनाएँ कीं। यह क्रम अब भी निरन्तर चल रहा है।

●70 से 80 लोगों ने इस साधना क्रम में भाग लेकर कोरोना से मुक्ति एवं सबके मंगल की, विश्व कल्याण की प्रार्थनाएँ कीं। यह क्रम अब भी निरन्तर चल रहा है।
●40 मिनट के इस सामूहिक क्रम में गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय जप-प्रार्थना के साथ आत्मबोध, स्वाध्याय, सत्संकल्प पाठ आदि को भी जोड़ा गया है।

श्री भक्त भूषण वर्मा ने बताया कि साधना और प्रार्थना का प्रभाव निर्विवाद है। निःसंदेह लोगों की मनःस्थिति और सूक्ष्म वातावरण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा होगा, लेकिन प्रत्यक्ष प्रभाव यह रहा कि सभी साधकों की दिनचर्या में कई अच्छी आदतों का समावेश हो गया। 40 मिनट के इस सामूहिक क्रम में गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय जप-प्रार्थना के साथ आत्मबोध, स्वाध्याय, सत्संकल्प पाठ आदि को भी जोड़ा गया है, जिसके लिए परम पूज्य गुरुदेव निरन्तर स्वजनों को प्रेरित करते रहे हैं। प्रातःकाल जल्दी उठने की आदत के साथ यह सभी क्रम साधकों के जीवन में समाविष्ट हो चुके हैं, जिससे एक नई ऊर्जा का अनुभव सभी करते हैं। वर्तमान जीवन शैली में व्यस्थता के बावजूद सभी इस सामूहिक साधना क्रम के शारीरिक-मानसिक एवं आत्मिक लाभों को देखते हुए इस क्रम को नियमित बनाये रखने के पक्ष में हैं, जो चल भी रहा है।

साहस तो कीजिए, कदम तो बढ़ाइए, संकल्पों को पूरा तो परम पूज्य गुरुदेव ही करते हैं

मनावर, धार। मध्य प्रदेश

श्रीमती विनीता प्रशान्त खण्डेलवाल युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरी तरह समर्पित बहिन हैं। उनके द्वरा चलाए गए मंत्रलेखन के विराट अभियान ने हजारों लोगों के जीवन को बदल दिया है। वे हर पल बस इसी दिशा में चिंतन करती हैं कि पूज्य गुरुदेव की विचार-संजीवनी का स्पर्श कराकर लोगों का जीवन कैसे बेहतर बनाया जाए। पूज्यवर के सबल संरक्षण का अनुभव करते हुए वे लिखती हैं-

हम इंदौर से भोपाल के लिए आगामी योजना हेतु प्रस्थान कर रहे थे। रास्ते में आष्टा और सोनकच्छ के बीच एक भोजनालय पर हमारा रुकना हुआ। वहाँ से निकलने लगे तो बाहर एक वाहन पर एक बालक पर हमारी नजर गई। उससे चर्चा की तो उसने बताया कि पवन ठाकुर नाम का 3 फुट 5 इंच वह बालक ग्राम गाजना, तहसील जवर जिला सीहोर का निवासी है और आदर्श मालवा स्कूल में नवीं कक्षा में पढ़ता है। समझाया तो गायत्री मंत्र लिखने व मंत्र जप करने के लिए वह बड़ी प्रसन्नता के साथ तैयार हो गया।

देखिए गुरुदेव का चमत्कार, सवा महीने पहले ही मेरे मन में कम ऊँचाई वाले वामन देवताओं को, जिनकी समाज उपेक्षा करता है, को मिशन से जोड़ने और उनके जीवन का उत्थान करने, उन्हें सम्मान देने का संकल्प उभरा था। चिंतित थी कि ऐसे लोगों से कैसे संपर्क हो, लेकिन अपने शिष्यों का पूरा-पूरा ध्यान रखने वाले पूज्य गुरुदेव की अहैतुकी कृपा से पवन से अनायास ही मुलाकात हो गई और वह गायत्री उपासना-स्वाध्याय के लिए सहज ही तैयार हो गया।

ऐसी ही एक बहिन श्रीमती माया पाटीदार मनावर भी इस संकल्प को पूरा करने में सहयोग के लिए सहज ही तैयार हो गई। वह तैयार ही नहीं हुई बल्कि इस कार्य को अपने जीवन का सौभाग्य मानने लगी।

मेरे मन में संकल्प उठते हैं और परम पूज्य गुरुदेव की कृपा से कितनी सरलता से पूरे होते चले जाते हैं, इसे देखते हुए मेरा विश्वास निरन्तर दृढ़ होता जा रहा है कि आप एक कदम बढ़ाएँ तो सही, गुरुदेव आप के लिए हजारों कदम बढ़ाने को तैयार हैं। आओ हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम पूरे विश्व को गायत्रीमय बनाएँगे।

मनावर धार : वामन देवताओ को मंत्रलेखन के लिए प्रेरित करती श्रीमती विनीता प्रशान्त खण्डेलवाल एवं अन्य परिजन

निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर 500 लोग हुए लाभान्वित

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ शासन के निदेर्शानुसार आयुष विभाग जिला धमतरी द्वारा ग्राम मुजगहन में गायत्री परिवार के सहयोग से एक दिवसीय जिला स्तरीय निःशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य शिविर, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, नेत्र जांच एवं रक्त परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। श्री विजय देवांगन महापौर नगर पालिक निगम धमतरी सहित अनेक गणमान्यों ने इस शिविर में उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। उद्घाटन समारोह में जिला आयुर्वेद अधिकारी डा.गुरुदयाल साहू एवं कई अन्य वरिष्ठ चिकित्सकों ने स्वास्थ्य रक्षा के बहुमूल्य सूत्र समझाए। इस अवसर पर गायत्री परिवार के जिला समन्वयक दिलीप नाग, सरपंच चन्द्र शेखर साहू, जनपद सदस्य धनेश्वरी साहू, वरिष्ठ ग्रामवासी लखन लाल साहू ने भी स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। शिविर में लगभग पाँच सौ से अधिक लोगों का उपचार कर निःशुल्क दवा दी गई।

शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री विश्वेश्वर सुबुद्धि को भावभरी श्रद्धांजलि

शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री विश्वेश्वर सुबुद्धि जी

दिनांक 22 दिसम्बर 2021 को पार्थिव काया त्यागकर अपने आराध्य की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। वे 24 फरवरी 1978 में पहली बार उडीसा से हजारो किलोमीटर यात्रा करके शान्तिकुंज आएँ थे। उन दिनों यातायात की सुविधा नही थी। हिन्दी भाषा भी उन्हे नहीं आती थी। अंतःप्रेरणा से अपने गुरु के प्रेम में खींचे चले आए और उनके कहने पर दो-तीन वर्ष रुके। 1984 को पुनः शांतिकुंज आयें। श्री शिवप्रसाद मिश्राजी ने उन्हें गुरुजी से मिलवाया। गुरुजीने प्रेम से सुबुद्धि जी को आशीर्वाद दिया और कहा अब मेरा काम ही तेरा जीवन है। तब से उनने पूर्ण समर्पण भाव से मिशन का कार्य किया। गुरुदेव माताजी की आज्ञा अनुसार 24 जनवरी 1987 को श्रीमती मिनौती सुबुद्धि से विवाह बंधन में बँधे। श्री सुबुद्धि जी सहज सरल हृदय के धनी थे। अश्वमेध हो या प्राकृतिक आपदा या मिशन का प्रचार-प्रसार जो भी कार्य उन्हें सौंपा गया पूर्ण श्रद्धा-निष्ठा व समर्पण के साथ करते रहे। उन्होंने शांतिकुंज के विभिन्न विभागों प्रेस, पत्राचार, संस्कृति कलामंच, प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर की सेवा आदि कार्यो में अपनी सेवायें दी। शांतिकुंज परिवार उन्हे भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्री अनिल प्रकाश गुप्ता, गायत्री शक्तिपीठ बदायूं। उत्तर प्रदेशः गायत्री शक्तिपीठ बदायूं के संरक्षक श्री अनिल गुप्ता का किडनी की लम्बी बीमारी के बाद 58 वर्ष के उम्र में निधन हो गया। स्थानीय गायत्री परिवार के परिजनों ने पुष्पांजलि दी एवं बच्चों ने उनको गार्ड ऑफ ऑनर दिया। शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी श्री अनिल कुमार राठौड़ ने बताया कि अनिल प्रकाश गुप्ता गायत्री शक्तिपीठ के संरक्षक और प्रखर वक्ता थे। वो गुरुदेव से काफी सालों से जुड़े हुए थे। अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं शांतिकुंज परिवार उनकी आत्मा की शांति के लिए समर्थ सत्ता माँ गायत्री से हार्दिक प्रार्थना करता है।

हमें ईश्वर का सच्चा साक्षात्कार तभी होता है, जब हम उसके सामने अपनी याचनाएँ लेकर नहीं, किन्तु अपनी भेंट लेकर जाते हैं। - रवीन्द्रनाथ टैगोर

दृढ़ निश्चय से हर परिवर्तन संभव-विकास वैभव

पटना। बिहार

विवेकानंद, एपीजे अब्दुल कलाम और गुरुदेव के बताए मार्गों पर चलें युवा, हर दिन गायत्री मंत्र के साथ करें ध्यान

'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लो'। विवेकानंद की ये बातें आज भी युवाओं के लिए प्रासंगिक हैं। आज का युवा शार्टकट में ही सबकुछ हासिल करना चाहता है। वह बहुत जल्द ही अपने को थका-हारा महसूस करता है। युवाओं में असीम शक्ति है। दृढ़ निश्चय से हर परिवर्तन संभव है। उक्त बातें गृह विभाग के विशेष सचिव विकास वैभव ने कहीं। मौका था कंकड़बाग स्थित गायत्री मंदिर परिसर में गायत्री परिवार के रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम के आयोजन का। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि केपी दुबे ने कहा कि आज युवा विरासत बचाने में नहीं, संपत्ति बनाने में ज्यादा मेहनत कर रहा है। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के संचालक मनीष कुमार ने युवाओं से कहा कि आज के युवाओं को विवेकानंद, एपीजे अब्दुल कलाम और गुरुदेव के आदर्शों से सीख लेनी चाहिए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आशिष ने कहा कि युवा यदि अपने आपको बेहतर बनाना चाहते हैं तो हर दिन गायत्री मंत्र के साथ ध्यान करें। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज्ञान प्रकाश, निशांत रंजन, प्रिंस रंजन, राजीवन रंजन, अभिषेक, सचिदानंद, विसला ने सक्रिय भूमिका निभाई।

वार्षिकोत्सव समारोह को संबोधित करते आइपीएस विकास वैभव ● जागरण

वार्षिकोत्सव समारोह को संबोधित करते आइपीएस विकास वैभव

जिला कारागार में 500 गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ बाँटी

बैतूल। मध्य प्रदेश

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में किए जा रहे विशेष प्रयासों के अन्तर्गत जिला कारागार बैतूल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बंदियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए 500 गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ बाँटी गईं। गायत्री परिवार के प्रमुख वक्ता श्री महेश ठाकुर ने कहा कि किन्हीं भी कारणों से आप गलत मार्ग पर चले गए हों, लेकिन गायत्री उपासना, मंत्र लेखन की साधना आपके जीवन की दिशा बदल देने में समर्थ है। गायत्री मंत्र जपने से व्यक्ति स्वतः सन्मार्ग की ओर बढ़ता जाता है।

गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी श्री रोशनलाल पटैय्या ने कुछ विशिष्ट उदाहरणों के साथ गायत्री मंत्र की साधना से जीवन में आने वाले परिवर्तनों का प्रमाण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आप युग मनीषी पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का साहित्य पढ़-समझ कर उनके विचारों को जीवन में उतारें, वे आपका जीवन बदल देंगे। प्रांतीय प्रतिनिधि हिरेंद्र शर्मा एवं विमल कुमार दुबे ने भी बंदियों को संबोधित किया।

गायत्री परिवार के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए जेलर श्री योगेन्द्र पंवार ने आशा व्यक्त की कि बंदीगण जब यहाँ से जाएँगे तो अच्छे व्यक्ति बनकर जाएँगे। कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ के राधेश्याम नरवरे ने एवं आभार ब्लॉक युवा समन्वयक आशीष पटैय्या ने व्यक्त किया।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष की एक महान उपलब्धि पूर्णता और शानदार सफलता की ओर अग्रसर है ग्रामे-ग्रामे गायत्री यज्ञ अभियान

नानपारा, बहराइच। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नानपारा ने शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में शान्तिकुञ्ज के संरक्षण-मार्गदर्शन में 111 अछूते गाँवों में सार्वजनिक गायत्री यज्ञ कर युगशक्ति गायत्री के प्रचार-विस्तार का संकल्प लिया है। विगत एक वर्षों में इसके अंतर्गत चरणबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। स्थानीय कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की टोली गाँव-गाँव जाकर ग्राम चेतना जागरण के दो दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न करा रही है। इनमें सार्वजनिक पंच कुण्डीय-नौ कुण्डीय यज्ञ, दीपयज्ञ, गोष्ठियाँ, दीवार लेखन, साहित्य वितरण, नशामुक्ति पोस्टर लगाना, घर-घर देवस्थापनाएँ आदि कार्यक्रम कराए जा रहे हैं।

शक्तिपीठ के द्वारा अब तक तीन चरण पूरे किए जा चुके हैं। इन तीन चरणों में 95 गाँवों में यज्ञीय आयोजन हुए। प्रत्येक कार्यक्रम में औसतन 100 श्रद्धालुओं की भागीदारी रही। प्रत्येक गाँव में गायत्री परिवार की शाखाओं का गठन हुआ। यज्ञ ही सम्पन्न नहीं कराया गया, बल्कि प्रत्येक गाँव से निरंतर सम्पर्क करने और वहाँ यज्ञ, संस्कार, संगोष्ठियाँ आदि की सुविधा बनाए रखने की भी व्यवस्था बनाई गई है। अगले चरण में इन ग्रामों में रचनात्मक आन्दोलनों के क्रियान्वयन की योजना भी बनाई जाएगी।

तीसरे चरण में 22 गाँवों में युगचेतना का प्रकाश पहुँचा। 18वाँ कार्यक्रम 18 एवं 19 दिसम्बर को विकासखण्ड शिवपुर के ग्राम धनावा में सम्पन्न हुआ। यद्यपि गाँवों में आयोजन के निर्धारण में कई विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, परंतु गुरुवर की अनुकंपा सदा बनी रही और सभी आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

गायत्री परिवार चितौड़गढ़ द्वारा केंद्रीय कारागार में कैदियों को व्यसन मुक्ति हेतु प्रेरित किया

चितौड़गढ़। राजस्थान

नशा समाज को खोखला बना रहा है। युवा पीढ़ी इसकी गिरफ्त में तेजी से आ रही है। जिस युवा पर देश की बागडोर है अगर वे नशे की बुरी लत के शिकार हो रहे हैं तो इससे देश का भविष्य भी बर्बाद हो रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से व्यसनमुक्तिअभियान पूरे देश में चलाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत चितौड़गढ राजस्थान के परिजनों ने केंद्रीय कारागार में कैदियों को विडियो के माध्यम से नशा मुक्ति हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक योगेश तेजी एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

चितौड़गढ़ केन्द्रीय कारागार में केदियों को व्यसन मुक्ति के संकल्प कराते गायत्री परिवार

कार्यक्रम में वीडियो प्रदर्शनी, प्रवचन आदि के माध्यमों से व्यसन मुक्ति के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य योग युक्त-व्यसन मुक्त भारत बनाने की दिशा में काम करना है।

कार्यक्रम में श्री रमेश चंद्र पुरोहित, श्री जगदीश जोशी, रमाशंकर वेद,बद्रीलाल माली,मदनलाल शर्मा, कृष्ण गोपाल व्यास , रमेश चंद्र उपाध्याय एवं दयाराम उपस्थित रहे।

शिव मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के साथ प्रज्ञा पुराण कथा

हल्दूचौड़। उत्तराखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ में 13 से 16 नवंबर 2021 को शिव मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। प्रथम दिन मंगल कलशयात्रा बहुत ही भव्य और दिव्य रही। जो गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ से प्रातः 8:00 बजे शुरू हो कर 10:00 बजे शिवालय प्रांगण में यज्ञ स्थल पर पहुँची जहाँ उसकी भव्य आरती सम्पन्न हुई। दि.15 नवम्बर को शिव मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा, शिव महात्म्य की अर्चना, पूजन कर महाभिषेक सम्पन्न किया गया।

कार्यक्रम से पूर्व 40 दिन तक कार्यकर्त्ताओं ने पाँच लक्ष्य महामृत्युंजय मंत्र जप अनुष्ठान संपन्न किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा जी और उनकी टोली के श्री रमेश तिवारी, श्री व्योमेश देशमुख, श्री छबीलाल गढ़िया, श्री राजेन्द्र राठौड़ द्वारा विधिवत संगीतमय शैली में पावन प्रज्ञा पुराण कथा के 'लोक कल्याण जिज्ञासा प्रकरण, परिवार व्यवस्था प्रकरण और अवतार परंपरा प्रकरण' तथा शिव महात्मय पर विशेष प्रकाश डाला गया।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वर्ष के कार्यक्रमों के अंतर्गत परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित 'प्रज्ञा पुराण सेट, वेद सेट और सद्ग्रंथ स्थापना' के कार्यक्रम भी संपन्न हुए। सैंकड़ों लोगों ने अपने घरों में युग साहित्य स्थापित किया।

कथा पंडाल में-पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री हरीश चंद्र दुगार्पाल जी ने दीप प्रज्वलन किया एवं गायत्री मंत्र चादर ओढ़ाकर, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधिओं का स्वागत अभिनंदन किया।

दीप महायज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। उपस्थित जनसमूह ने दीपयज्ञ में भाव-विभोर होकर आनंद की अनुभूति की। स्थानीय भाई-बहिनों ने भारी संख्या में बड़े उत्साह से सम्पूर्ण कार्यक्रम में भाग लिया।

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र के पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल, रुद्रपुर, उधमसिंह नगर आदि जनपदों के कार्यकर्ता भाई-बहनों ने 4 दिन रह कर अपनी सेवाएं दीं। कुमाऊं मण्डल के कार्यकर्त्ताओं की दायित्वबोध एवं परिचय-गोष्ठी भी संपन्न हुई।

कार्यक्रम की सफलता के लिए श्री बंशीधर भट्ट, श्री आरपी तिवारी, श्री उमाकांत मिश्रा, श्री हीरा सिंह ऐठानी कपकोट जिला बागेश्वर, श्री दिवाकर जोशी पिथौरागढ़, श्री विशन दत्त भट्ट बागेश्वर, श्री योगेंद्र जोशी अल्मोड़ा, श्री कमल नाथ गोस्वामी भिक्यासैन, श्री गणेश सिंह नेगी द्वाराहाट, श्री राजेश पांडे रानीखेत, श्री गोकुल दुबे एवं टीम कोलकाता, श्री चंद्रांशु मिश्रा लखनऊ, श्री हरि नंदन ओली खटीमा, श्री बंशीधर उपाध्याय बनबसा, श्रीमती सर्वेश रस्तोगी एवं श्री दिनेश शर्मा काशीपुर, श्रीमती एवं श्री रणधीर यादव आदि का विशेष सहयोग रहा।

हल्दूचौड़ सद्ग्रंथ स्थापना कराते परिजन एवं प्रज्ञा पुराण कथा का श्रवण करते परिजन

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशिष्ट सेवाओं का लाभ लीजिए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन अल्प अवधि मॉड्युलर कोर्स चलाए जा रहे हैं। विस्तृत जानकारी के लिए- लॉगऑन कीजिए-https//www.dsvv.ac.in/stmc/
सम्पर्क सूत्र -info.stmc@ dsvv.ac.in

शांतिकुंज में गुजरात का प्रांतीय युवा सम्मेलन संपन्न

राष्ट्र के उत्थान के लिए युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़ना ही होगा-डॉ. चिन्मय पंड्या

युग निर्माण योजना से जुड़ने का अर्थ है समाज, संस्कृति और राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए समर्पित होने का संकल्प। वस्तुतः समाज एवं राष्ट्र का उत्थान युवा पीढ़ी को अपनी सनातन संस्कृति से परिचित कराने से ही संभव होगा। इसके लिए हमें अग्रदूतों की भूमिका निभानी होगी। हमें अपने संगठन को सशक्त कर समाज के समक्ष अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने होंगे।

आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पंड्या, प्रति कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने शांतिकुंज में आयोजित गुजरात प्रांत के दो दिवसीय युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया। इस शिविर में गुजरात के हर जिले से आए जोन, उपजोन, जिला समन्वयक स्तर के 45 वरिष्ठ युवाओं ने भाग लिया।

23 एवं 25 दिसंबर की तारीखों में आयोजित यह शिविर युवा सक्रियता में नया उत्साह जगाने वाला था। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पंड्या जी एवं श्रद्धेय शैल जीजी ने वरिष्ठ युवाओं के संगठित प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सदग्रंथ स्थापना, शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष में संग्रहणीय ऐतिहासिक डाक टिकट जैसे प्रमुख विषयों पर युवा युग सृजेताओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि हमें समाज में प्रगतिशील परंपरा की स्थापना के लिए साहसिक कदम बढ़ाने होंगे।

गुजरात प्रांत के युवाओं के इस विशिष्ट सम्मेलन को शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री महेंद्र शर्मा, जोन समन्वयक श्री ओपी शर्मा, युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री के पी दुबे, श्री प्रमोद भटनागर, गुजरात जोन समन्वयक श्री उदय मिश्रा सहित कई वरिष्ठ वक्ताओं ने संबोधित किया। उन्होंने शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष को एक ऐतिहासिक अवसर बताते हुए विशेष आंदोलन चलाने की प्रेरणाएं दीं।

गुजरात प्रांत के युवा समन्वयक श्री किरीट सोनी ने बताया कि शांतिकुंज से मिले मार्गदर्शन के हर बिंदु पर परस्पर चिंतन- मंथन गोष्ठियाँ हुईं। आगामी सक्रियता के संकल्प उभरे। ऐसे ही सम्मेलन प्रत्येक जिला एवं तहसील स्तर पर आयोजित करने की योजना बनी है, ताकि संगठन को नया रूप देने के साथ युवा आंदोलन को गति देते हुए रचनात्मक सक्रियता बढ़ाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जा सकें। श्री किरीट सोनी ने बताया कि सभी प्रतिनिधि गुजरात से साथ-साथ आए थे। आने-जाने के समय प्रवास काल में भी सकारात्मक विचार मंथन चलता रहा, जिसके बहुत ही अच्छे परिणाम आगामी दिनों में दिखाई देंगे, ऐसी आशा है।

गुजरात प्रांत की दो दिवसीय संगोष्ठी में आये परिजनों को संबोधित करते आदरणीय डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी

शांतिकुंज में दो दिवसीय प्रांतिय युग सृजेता संगोष्ठी सम्पन्न

संस्कार व संस्कृति से युवाओं को मिलता है नवजीवन-श्री महेन्द्र शर्मा

पिछले लंबे समय से कोरोना के कारण देश दुनिया की गतिविधियां ठप्प चल रही थी। गायत्री परिवार के विविध कार्यक्रम भी नियमित नहीं चल पा रहे थे। अब स्थितियाँ सामान्य होने लगी हैं। इसे देखते हुये मिशन की युवा शक्ति ने शांतिकुंज आने का निर्धारण किया। इसके अंतर्गत दिसम्बर माह में युवा प्रबोधन शिविर आयोजित हुये।

1- दि 21 से 23 दिसंबर तक जहानाबाद एवं पटना बिहार के 160 युवा एवं परिजन 2- दि 23 से 25 दिसंबर तक गुजरात के जिलों के 45 जिला युवा समन्वयक 3- दि 25 और 26 दिसंबर तक उत्तर प्रदेश के समस्त जिलों से 364 युवाओं ने इन शिविरो में भागीदारी की।

शिविर में प्रमुख उद्बोधन देने वाले वरिष्ठों में आद.डॉ.ओ.पी. शर्मा जी, प्रो.भटनागर जी, शांतिकुंज के व्यवस्थापक आद.श्री महेन्द्र शर्मा जी, डॉ गायत्री शर्मा, श्री केदार प्रसाद दुबे जी, श्री श्याम बिहारी दुबे जी, श्री कैलाश महाजन जी ने मार्गदर्शन दिया, इसके अतिरिक्त जोन की ओर से श्री नरेन्द्र ठाकुर जी, श्री उदय मिश्रा जी एवं युवा प्रकोष्ठ की ओर से श्री आशीष सिंह ने युवाओं को नूतन सूत्र दिये। विशेष मार्गदर्शन के रूप में दे.सं.वि.वि. के प्रतिकुलपति आद. डॉ.चिन्मय पण्डया जी ने जीवन साधना एवं आध्यात्म इस विषय पर उपयोगी मार्गदर्शन दिया। बिहार के जहानाबाद के समूह जो नियमित रविवारीय वृक्षारोपण कर रहा है उसके द्वारा बाल संस्कार शाला एवं व्यसन मुक्ति कार्यक्रम के लिये भी संकल्प लिया गया। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय में भी प्रतीक रूप में एक वृक्ष लगाकर अपने अभियान की निरंतरता बनाये रखी। गुजरात के प्रतिनिधियों ने एकमत होकर प्रांत के युवाओं को मंडलों के माध्यम से संगठित करने का विश्वास दिलाया। उत्तर प्रदेश में श्रावस्ती में आगामी नवम्बर 22 में प्रांतीय युवा चेतना शिविर निर्धारित हुआ है। इसके अनुयाज के रूप में संगोष्ठी में युवाओं ने अपने संकल्प व्यक्त किये। जिसमें अन्नदान, अंशदान, समयदान के साथ-साथ वर्ष 2026 तक प्रांत के एक लाख गांवों तक जाने का विशेष संकल्प दोहराया। जिले में इस कार्यक्रम के पूर्व युवाओं को जोड़ने एवं जागृत करने हेतु कन्या कौशल शिविर, जिला स्तरीय एक दिवसीय युवा शिविर लगाने के संकल्प लिऐ गये। **सभी समूहों ने श्रद्धेय डॉ साहब एवं श्रद्धेया जीजी से भेंट कर विशेष आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन लिया।**

उत्तर प्रदेश प्रांत की दो दिवसीय संगोश्ठी में आये परिजनो को संबोधित करते व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्माजी

गायत्री शक्तिपीठ पर नर्मदेश्वर महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा

सद्गुण ही अच्छे चरित्र और मजबूत व्यक्तित्व का आधार: श्याम बिहारी

बदायूं। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ एवं आध्यात्मिक चेतना केन्द्र में 25 एवं 26 नवम्बर को 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ नर्मदेश्वर महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा एवं रुद्राभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शान्तिकुज प्रतिनिधि श्री श्याम बिहारी दुबे ने भगवान महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा एवं यज्ञ विधान सम्पन्न कराते हुए युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सद्गुण ही अच्छे चरित्र एवं मजबूत व्यक्तित्व का आधार हैं। युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने गायत्री मंत्र को जन-जन तक पहुँचाकर व्यक्ति में श्रेष्ठ संस्कार, उत्कृष्ट चिंतन, सद्भाव जाग्रत कर मानव में देवत्व का उदय किया।

श्री संजीव कुमार शर्मा ने बताया कि प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व शहर के सुप्रसिद्ध बिरुआबाड़ी मंदिर, हर प्रसाद मंदिर, नगला सिद्ध मां काली शक्तिपीठ, गौरी शंकर मंदिर, पीडब्ल्यूडी के शिव मंदिर और तीर्थ स्थलों के दर्शन और पूजन का क्रम रहा। पूरा क्षेत्र हर-हर महादेव और महाकाल के जयकारों से गुंजायमान हो गया। प्राण प्रतिष्ठा के समय डॉ. वीरपाल सिंह सोलंकी ने किया रुद्राभिषेक, सुशील कुमार गुप्ता ने सपत्नीक पूजन किया। 25 नवंबर को सायंकाल विशाल दीपयज्ञ हुआ।

गायत्री महायज्ञ में सांसद संघमित्रा मौर्य, भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव गुप्ता, नगर पालिका अध्यक्ष दीपमाला गोयल ने मां गायत्री, युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा और वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा का पूजन किया।आत्मीय परिजनों ने सूक्ष्म जगत के परिशोधन के लिए गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र की विशेष आहुतियां यज्ञ भगवान को समर्पित कीं।

एक युगल का विवाह संस्कार भी हुआ। अनेक लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली व अन्य कई संस्कार हुए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री हरीप्रसाद चौधरी, मनीष साहू ने ''होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से...'' प्रज्ञा गीत की शानदार प्रस्तुति दी।

प्रज्ञा पुराण कथा करते श्री श्याम बिहारी दुबेजी एवं यज्ञ करते स्थानिक परिजन

महाकाल प्राण प्रतिष्ठा पूजन में भाग लेते स्थानीय अग्रणी परिजन

राजनांदगांव मार्शल आर्ट एकेडमी में कराटे परीक्षा सम्पन्न

चार खिलाडियों को ब्लेक बेल्ट की उपाधि

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़

विगत 24 अक्टूबर 2021 को राजनांदगाँव मार्शल आर्ट अकादमी कस्तुरबा महिला मंडल स्कूल में शीकोकाई शितोरियू कराटे इंडिया के प्रमुख प्रशिक्षक हांशी भरत शर्मा जी के मार्गदर्शन में रेंशी मुरलीसिह भारद्वाज द्वारा बेल्ट ग्रेडिंग परीक्षा लिया गया। जिसमें शहर के गायत्री विद्यापीठ, नीरज पब्लिक स्कूल एवं राजनांदगांव शहर के अन्य स्कूल के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। उक्त परीक्षा में कु. रोशनी राजपूत, अदिति राजपूत एवं आकृती राजपूत ने ब्लेक बेल्ट प्रथम डिग्री परीक्षा उत्तीर्ण किये। परीक्षा में उत्तीर्ण सभी छात्र छात्राओं को छत्तीसगढ़ शिकोकाई शितोरियू कराटे के प्रमुख प्रशिक्षक एवं राजनांदगांव जिला कराटे संघ के सचिव श्री मुरलीसिह भारद्वाज द्वारा बेल्ट एवं प्रमाण पत्र वितरण किया गया। परीक्षा में उत्तीर्ण सभी छात्र छात्राओं को अंतराष्ट्रीय कराटे खिलाड़ी गुंडाधूर अवार्ड प्राप्त सेंशाई अंबर सिह, संस्था के वरिष्ठ खिलाड़ी एवं प्रशिक्षक जय प्रकाश साहू, दुर्गेश साहू, मोनिका पाढ़ी, करण साहू, टिकेशवर साहू, ईषभ सिंह, रघुवीर मिश्रा, निकिता पांडे, नेहा यादव एवं राजनांदगांव मार्शल आर्ट अकादमी के समस्त अभिभावक एवं खिलाडियों ने बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दिये। जिन छात्र छात्राओं ने परीक्षा उत्तीर्ण किये उनके नाम इस प्रकार है- फर्स्ट डान ब्लैक बेल्ट में आदिती राजपूत, रोशनी राजपूत, आकृति राजपूत, सानिध्य मौर्य। ब्राउन बेल्ट में ओमनेहा सिन्हा, आदित्य जैन, आस्था कावरे, दीपांशु सिन्हा, वेगिता अग्रवाल, तरुण कुमार साहू। इसी प्रकार ग्रीन बेल्ट में गीतेश साहू, प्रथम तिवारी, नेहा साहू, ध्रुव राठौर, जय भानुशाली। ऑरेंज बेल्ट में- पीहू कावरे, भास्कर साहू, पुरविल साहू, पारुल साहू, मौली मंडल, कृष्णा पित्रोड़ा। येलो बेल्ट में मानसी साहू, अब्दुल सौबन, गगनजीत गंजीर, जी उज्जवल साहू, विद्यासागर गंजीर, कुलदीप सिंह ठाकुर, शेख हम्जा, अवनी खंडेलवाल, अभिदक्ष मिश्रा, अनन्या पांडे, नमन पटेल, मेहेक भानुशाली, जेनिल भानुशाली, वीर भानुशाली, भावेश साहू, अदिति उइके।

मार्शल आर्ट एकेडमी में कराटे में भाग लेने वाले बच्चे एवं प्रमाणपत्र के साथ बच्चे

जीवन के प्रकाशवान क्षण वे हैं, जो सत्कर्मों में बीते और नेकी करते हुए बीते।

बहरिन के मंच पर भारतीय संस्कृति का संदेश लेकर पहुंचे देसंविवि. के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आद.डॉ. चिन्मय पण्ड्या 'द किंग हमद ग्लोबल सेंटर फार पीसफुल' बहरीन में चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित रहे। इस अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में विश्व के विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने भागीदारी की। भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ.चिन्मय पन्ड्या जी ने 'अज्ञानता ही शांति का दुश्मन है' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में उद्बोधन दिया।

डॉ.चिन्मय पण्ड्या जी ने संबंधित विषय पर युगऋषि वेदमुर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के दृष्टिकोण पर उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि अज्ञानता हमें अंधकार की ओर ले जाती है, अज्ञानता ही मनुष्य के सभी दुखों का द्वार है। अज्ञानी पुरुष शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ होता है जो शान्ति का दुश्मन है। अज्ञानी मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह होता है कि उसे अनुचित व्यक्ति के प्रभाव में रहना पड़ता है, जबकि मस्तिष्क और चित्त से शान्त व्यक्ति रचनात्मकता का स्त्रोत होता है। ऐसे व्यक्ति अपने लिए ही नहीं संपूर्ण विश्व मानवता के लिए प्रेरणाप्रद एवं उपयोगी होते हैं। इससे पूर्व डॉ. पन्ड्या बहरीन में स्थित में 300 साल पुराने श्री कृष्ण भगवान के मंदिर का दर्शन और वहां के भारतीय पुजारी से मिले।

अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में हुए आमंत्रित बहरीन में भारतीय संस्कृति के महत्व से विदेशियों को कराया अवगत

इस कार्यक्रम में डॉ.कर्मिया अल्माजोरुई (शिक्षा और ज्ञान विभाग, आबूधाबी में शिक्षा नीतियों और कार्यक्रम क्षेत्र के कार्यकारी निदेशक), एच. ई. हैरिस सिलाज्जिक (बोस्निया और हजैगोविना के पूर्व राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री), महामहिम कोलिंडा ग्रैबर कितारोविक (क्रोएशिया गणराज्य के पूर्व राष्ट्रपति), डॉ.शेखा राना बिंत ईसा बिन दाइज अल खलीफा (उच्च शिक्षा परिषद के महासचिव और शिक्षा के न्यासी बोर्ड के उपाध्यक्ष) बेस्टी मैथिसन (डिप्टी चेयरमैन किंग अहमद ग्लोबल सेंटर फोर शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व), प्रो कृश रावल (ओ.बी.डी.) निर्देशक, फेथ इन लीडरशिप, लंदन,सर्बिया के विदेश सचिव और भारत के प्रथम सचिव उपस्थित रहें।

बहरिन में आंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय संस्कृति का संदेश देते आदरणीय डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी, सम्मेलन में भाग लेते विभिन्न देशों के प्रतिनिधिएवं श्रीकृष्ण मंदिर के पुजारी के साथ एवं विभिन्न देशो के प्रतिनिधिओं के साथ डॉ.पण्ड्याजी

जन्मभूमि आँवलखेड़ा में प्रवक्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा। उत्तर प्रदेश

12 एवं 13 दिसम्बर की तिथियों में गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा में दो दिवसीय प्रवक्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसका शुभारंभ शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री घनश्याम देवांगन एवं श्रीमती दुर्गा देवांगन के साथ आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रान्तीय समन्वयक डॉ. संगीता सारस्वत की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ. संगीता सारस्वत ने गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक स्वरूप एवं गर्भावस्था में आहार पीपीटी के माध्यम से बहुत ही सुंदर ढंग से समझाया।

आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी कार्यशाला संपन्न

अलीगढ़ में कार्यशाला

गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा के सहयोग से 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अन्तर्गत अलीगढ़ में भी एक दिवसीय कार्यशाला हुई, जिसमें आँवलखेड़ा जोन की बहनों ने भाग लिया। गर्भ संस्कार का वैज्ञानिक स्वरूप, गर्भवती की आदर्श दिनचर्या, गर्भ संवाद, उचित आहार, गर्भवती के लिए उचित योग व प्राणायाम आदि विषयों पर विस्तृत जानकारियाँ दी गईं। डॉ. संगीता सारस्वत के अलावा इन्हें श्रीमती प्रियंका शांडिल्य, श्रीमती प्रतिष्ठा शर्मा, प्रो. राजेन्द्र सिंह ने प्रस्तुत किया। श्रीमती क्षमा चौधरी ने अभियान को व्यापक कैसे बनाया जाए? इस विषय पर प्रकाश डाला। गायत्री चेतना केन्द्र प्रतिनिधि श्री जे.डी. मित्तल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

डॉ. संगीता सारस्वत ने 'नारी जागरण' सम्बन्धी विशेष व्याख्यान दिया। इस अवसर पर सर्वश्री उदय प्रकाश, मनोज शैली, मनवीर सिंह, भारत विकास परिषद से डॉ. दिव्या लहरी, श्रीमती सुशीला सिंह, श्रीमती रश्मि सिंह, श्रीमती नीलम शर्मा इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जिला संयोजिका श्रीमती मंगलेश लता यादव ने किया।

आंवलखेडा एवं अलीगढ में आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी कार्यशाला में बहिनों एवं बच्चों को मार्गदर्शन देती डॉ.संगीता सारस्वत

कैंसर पीड़ितों की सहायता कर मनाया क्रिसमस पर्व

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया मुम्बई पीड़ितों के प्रति दया, भाव संवेदनाओं का विस्तार, आत्मीयता विस्तार जैसे युग निर्माण मिशन के सूत्रों का पालन करते हुए हमेशा विशिष्ट पर्वों एवं अवसरों पर गरीबों का सहारा बनता है। विगत 6 वर्षों से कैंसर पीड़ितों के चेहरे पर मुस्कान लाते हुए क्रिसमस पर्व मना रहा है। इस वर्ष दिया के अनेक सदस्य संत गाडगे महाराज धर्मशाला, दादर पहुँचे और वहाँ रह रहे लगभग 500 कैंसर पीड़ितों एवं उनके परिचारकों के साथ खुशियाँ साझा की। उल्लेखनीय है कि यह एक ऐसी धर्मशाला है जो निहायत गरीब कैंसर पीड़ितों और उनके परिचारकों को नाममात्र के किराए पर आवास की व्यवस्था प्रदान करती है।

दिया सदस्यों ने लगभग 350 बादाम के पैकेट बाँटे। हितेश-सुजाता शेट्टी के विशेष सहयोग से पीड़ितों-परिचारकों को साधना-स्वाध्याय की प्रेरणा के साथ अखण्ड ज्योति, मिशन की पुस्तकें और गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ प्रदान कीं। एड. गायत्री नायक बच्चों के लिए खिलौने और साहाना शेट्टी स्वयं के बनाए केक ले गई थीं। मनीष पाटिल ने सभी बच्चों में बिस्किट बाँटे। पीड़ितों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए गायत्री मंत्र तथा महामृत्युंजय मंत्रोच्चार के साथ प्रार्थनाएँ की गईं।

मुम्बई-कैन्सर पीड़ितों के चेहरों पर मुस्कान लाते मुम्बई दिया के सदस्य

परिव्राजक परिष्कार शिविर में 15 जिलो के परिव्राजक हुए सामिल

गायत्री शक्तिपीठ, उज्जैन। म.प्र.

देशकाल ,समय, परिस्थितियों के अनुसार युग की मांग बदलती रहती है। अतः अपने प्रधान उद्देश्य को केंद्रित करते हुए अपने क्रियाकलापों, क्रियापद्धति में युगानुकूल परिवर्तन और परिष्कार करते रहना चाहिए। परिव्राजक सदा से समाज के दिशा सूचक रहे हैं, आप अपनी भूमिका पर गर्व महसूस कीजिए यह उद्गार श्री योगराज वाल्कि प्रतिनिधि मध्यजोन शांतिकुंज हरिद्वार ने गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर चल रहे तीन दिवसीय परिव्राजक परिष्कार शिविर में व्यक्त किए। यहाँ पर 25, 26 एवं 27 दिसम्बर को मध्यजोन के उज्जैन, इंदौर एवं खंडवा उपजोन के 15 जिलों से करीब 80 पूर्णकालिक परिव्राजक प्रशिक्षण के लिए आए हुए थे। इस अवसर पर सेंधवा से पधारे गौपुत्र श्री मेवालाल पंडित जी ने स्मरण कराया कि परिव्राजक को अपनी जीवनशैली को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी ब्राह्मणोचित आजीविका के अनुसार चलाना चाहिए। अपने संस्थानों पर जन्मदिन, विवाह दिन पर उपहार में अखंडज्योति, युग निर्माण योजना मासिक पत्रिकाएं देने का संकल्प भी कराया गया। श्री श्रीकृष्ण शर्मा इंदौर उपजोन समन्वयक ने बताया कि परिव्राजक एक पुजारी के साथ-साथ एक प्रेरणा स्त्रोत भी है जो अपने संस्थान पर आने वाले श्रद्धालुओं में सांस्कृतिक चेतना के बीज बोता है तथा अपने संस्थान के आलोक क्षेत्र में सतत संपर्क करता है। संपर्क-सतत संपर्क ही परिव्राजक का प्रमुख गुण होना चाहिए। श्री पन्नालाल बिरला समन्वयक खंडवा उपजोन ने परिव्राजकों से निवेदन किया कि वह सतत स्वाध्याय को अपने जीवन का अंग बनाते हुए दूसरों को आलोकित करने की अपनी क्षमता बढ़ाएं।

उज्जैन उपजोन के समन्वयक श्री राजेश पटेल जी ने बताया कि मध्यजोन की इस तरह की यह प्रथम कार्यशाला है। उज्जैन के एक विशिष्ट पर्व श्री हनुमान अष्टमी पर संपन्न हो रहे इस शिविर से हमारे परिव्राजकों को श्री हनुमान जी महाराज के '**रामकाज कीन बिनु मोहि कहाँ विश्राम**' के मंत्र के अनुसार गुरु कार्य के लिए प्राणप्रण से समर्पित होने और अपने प्रज्ञा संस्थान को जन जागृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प दिलाया गया। इस तरह की कार्यशालाएं अब पूरे प्रदेश में प्रमुख शक्तिपीठों पर आयोजित की जाएंगी।

कार्यशाला में भागीदारी कर रहे परिव्राजकों के मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए 20 उत्कृष्ट परिव्राजकों को सम्मानित भी किया गया।

उज्जैन परिव्राजक परिष्कार शिविर में भाग लेते 15 जिलों के परिजन

जब तक हृदय में स्वार्थपरता रहती है, तब तक भगवान से प्रेम नहीं हो सकता है। - स्वामी विवेकानन्द

नारी सशक्तीकरण अभियान में विशिष्ट योगदान देंगी श्रीमती बेबीरानी मौर्य

उत्तराखण्ड की पूर्व राज्यपाल श्रीमती बेबीरानी मौर्य 26 दिसम्बर को सपरिवार देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज पधारीं। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी से भेंट करने के बाद उन्होंने कहा कि यहाँ आकर मुझे युवा जागरण एवं नारी सशक्तीकरण के लिए कार्य करने की विशेष प्रेरणा मिली है। मैं इसके लिए भरपूर प्रयास करूँगी।

इससे पूर्व माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए श्रद्धेया जीजी ने श्रीमती मौर्य को गायत्री महामंत्र लिखित उपवस्त्र, युगसाहित्य एवं शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वर्ष का स्मृति चिह्न भेंट किया। इस अवसर पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने युवा जागरण एवं नारी सशक्तीकरण सम्बन्धी परम पूज्य गुरुदेव के दृष्टिकोण से अतिथियों को अवगत कराया।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने श्रीमती मौर्य और उनके पति श्री प्रदीप कुमार मौर्य को शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों एवं युवा पीढ़ी को स्वावलंबी बनाने की दिशा में चल रही विविध गतिविधियों की जानकारी दी। माननीय अतिथियों ने गायत्री माता मंदिर एवं गुरुदेव-माताजी के स्मारकों पर श्रद्धा-सुमन समर्पित किए।

उत्तराखण्ड की पूर्व राज्यपाल श्रीमती बेबीरानी मौर्य श्रद्धेय द्वय से चर्चा करते हुए।

शान्तिकुञ्ज मेरा गुरुद्वारा है। यहाँ आकर मन को अपार शान्ति और नई-नई प्रेरणाएँ मिलती हैं: प्रो डिण्डोर, उच्च शिक्षा मंत्री, गुजरात सरकार

शान्तिकुञ्ज ने युवाओं की ऊर्जा के सकारात्मक उपयोग सम्बन्धी मार्गदर्शन किया -प्रो.डिंडोरजी

24 दिसंबर को गुजरात के उच्च और तकनीकी शिक्षा, विज्ञान और संसदीय कार्य मंत्री प्रो. कुबेर डिण्डोर अपने दो दिवसीय प्रवास में गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय आए। यहाँ श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के साथ हुई भेंट के समय उन्होंने प्रदेश के युवाओं के उत्थान सम्बन्धी चर्चाएँ कीं। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं। उनके व्यक्तित्व को सँवारने एवं निखारने की आवश्यकता है। युवाओं को सही समय पर सही दिशा मिल जाए, तो ये युवा वायु की दिशा को भी मोड़ सकने वाली क्षमता विकसित कर सकते हैं। श्रद्धेया शैल जीजी ने युवाओं की अकूत ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग कैसे हो, इस सम्बन्ध में मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित किया।

प्रो. डिंडोर, गुजरात के आदिवासी बहुल क्षेत्र संतरामपुर विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं। उन्होंने श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी के समक्ष अपने विधानसभा क्षेत्र में गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में एक विराट सम्मेलन आयोजित करने की अपनी इच्छा व्यक्त की, ताकि वनवासियों को उनके जीवन के उत्थान के लिए प्रेरित किया जा सके।

उच्च शिक्षा मंत्री प्रो. डिंडोर ने शान्तिकुञ्ज प्रवास पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज मेरा भी गुरुद्वारा हैं। यहाँ आकर मन को अपार शांति और नई-नई प्रेरणाएँ मिलती हैं।

मंत्री महोदय ने शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों का भी अध्ययन किया। प्रो. डिंडोर के साथ उनकी बहिन और परिवार के अन्य सदस्य भी साथ आए थे। इस अवसर पर संतरामपुर क्षेत्र के गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन सर्वश्री रामजी भाई गारासिया, नाथा भाई भाभोर, राजूभाई दवे, रमेशभाई जोशी आदि भी उनके साथ थे।

गुजरात के मान.उच्च शिक्षा मंत्री प्रो.डिंडोर जी श्रद्धेय द्वय के साथ एवं गुजरात के अग्रणी परिजन

ऋषिहुड विश्वविद्यालय द्वारा गुरुकुल परम्परा पर आधारित ऋषि संस्कृति के पुनर्जीवन के प्रयास प्रशंसनीय हैं। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

हमारा शिक्षा तंत्र प्राचीन ज्ञान एवं संस्कृति की समृद्ध विरासत के अनुरूप होना चाहिए। - माननीय उप राष्ट्रपति जी

ऋषिहुड यूनिवर्सिटी के उद्घाटन समारोह में मार्गदर्शन देते आद.डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी, एवं इस समारोह में भाग लेते शिक्षा जगत के विद्वान

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

दिल्ली के विज्ञान भवन में माननीय उप राष्ट्रपति श्री वैंकया नायडू के मुख्य आतिथ्य में 18 दिसम्बर को सोनीपत, हरियाणा में नवनिर्मित ऋषिहुड यूनिवर्सिटी का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय को इस समारोह में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। माननीय उप राष्ट्रपति जी की दायीं ओर नवस्थापित विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय श्री सुरेश प्रभु, सांसद विराजमान थे, वहीं बायीं ओर विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी थे। उल्लेखनीय है कि यह विश्वविद्यालय सोनीपत, हरियाणा में स्थापित है।

भारत के उप राष्ट्रपति माननीय श्री वैंकया नायडू ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ओजस्वी, युवा प्रतिनिधि के विचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने मेरे विचारों को ही बड़े उत्कृष्ट एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है।

समारोह में दिए अपने संदेश में शान्तिकुञ्ज-देसंविवि के प्रतिनिधि ने भारत की प्राचीन ऋषि परम्परा एवं गुरुकुल परम्परा को पुनर्जीवित करने के ऋषिहुड विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हमारे तपस्वी ऋषि-मनीषीयों ने सारे विश्व में मानवता को उत्कर्ष का मार्ग दिखाया है। यह ऋषि परम्परा सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। भारत के उप राष्ट्रपति माननीय श्री वैंकया नायडू ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ओजस्वी, युवा प्रतिनिधि के विचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने मेरे विचारों को ही बड़े उत्कृष्ट एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है।

माननीय उप राष्ट्रपति जी ने कहा कि हमारा शिक्षा तंत्र प्राचीन ज्ञान एवं संस्कृति की समृद्ध विरासत के अनुरूप होना चाहिए। विदेशी शासकों ने न केवल हमारी संपदा को लूटा है, बल्कि उनके द्वारा विकसित शिक्षा पद्धति ने हमारे मनों को भी दूषित किया है। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षा में तकनीक के समावेश की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि तकनीकी सहयोग शिक्षा को शिखर तक पहुँचा सकता है।

शान्तिकुञ्ज में लोगों ने ध्यान, हवन के साथ किया वर्ष 2022 की प्रथम किरण का स्वागत

वर्ष 2022 में नये संकल्प के साथ काम करें। विगत वर्ष आई कोरोना महामारी की याद को भूलकर आगे बढ़े। इससे हमारा जीवन उच्चतर स्थान पर पहुँचेगा और अनेकानेक सफलताएँ भी प्राप्त होंगी। -श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्या

यह वर्ष अच्छे विचारों को क्रियान्वित करने और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने आया है। इस वर्ष में नवसृजन, आध्यात्मिक उन्नति जैसे अनेक स्वर्णिम कोषों का उद्गम होगा। -श्रद्धेया जीजी

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में देशभर से आये हजारों परिजनों ने शनिवार को आत्मिक प्रगति के लिए ध्यान साधना के साथ पवित्र हवनकुण्डों में विशेष आहुति डालकर कैलेण्डर नववर्ष का अभिनंदन किया।

इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि बीते वर्ष की समीक्षा करते हुए वर्ष 2022 में नये संकल्प के साथ काम करें। विगत वर्ष आई कोरोना महामारी की याद को भूलकर आगे बढ़ें। इससे हमारा जीवर उच्चतर स्थान पर पहुंचेगा और अनेकानेक सफलताएँ भी प्राप्त होंगी। युगऋषि पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य। इस दिशा में हम सभी अपना-अपना एक कदम आगे बढ़ायें। संस्था की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि यह वर्ष अच्छे विचारों को क्रियान्वित करने और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने आया है। श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि इस वर्ष नवसृजन, आध्यात्मिक उन्नति जैसे अनेक स्वर्णिम कोषों का उद्गम होगा।

वहीं कैलेण्डर नववर्ष की प्रथम किरण के स्वागत के अवसर पर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के साथ गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में आये हुए सभी परिजनों ने गायत्री महामंत्र व महामृत्युंजय मंत्र से विशेष यज्ञ में आहुतियाँ दी। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिवार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं शांतिकुंज परिवार ने गायत्री पविार प्रमुखद्वय से भेंटकर नववर्ष के लिए विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। साथ ही बड़ी संख्या में विभिन्न संस्कार भी सम्पन्न कराये गये।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.1.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23